

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥ २०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥ २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥ २३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥ २४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥ २५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥ २६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥ २७२ ॥ २७३ ॥ २७४ ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥ २७९ ॥ २८० ॥ २८१ ॥ २८२ ॥ २८३ ॥ २८४ ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ २८७ ॥ २८८ ॥ २८९ ॥ २९० ॥ २९१ ॥ २९२ ॥ २९३ ॥ २९४ ॥ २९५ ॥ २९६ ॥ २९७ ॥ २९८ ॥ २९९ ॥ ३०० ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥ ३१८ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥ ३३६ ॥ ३३७ ॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥ ३४१ ॥ ३४२ ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥ ३४७ ॥ ३४८ ॥ ३४९ ॥ ३५० ॥ ३५१ ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥ ३५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥ ३६० ॥ ३६१ ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥ ३६९ ॥ ३७० ॥ ३७१ ॥ ३७२ ॥ ३७३ ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥ ३७६ ॥ ३७७ ॥ ३७८ ॥ ३७९ ॥ ३८० ॥ ३८१ ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥ ४११ ॥ ४१२ ॥ ४१३ ॥ ४१४ ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥ ४१७ ॥ ४१८ ॥ ४१९ ॥ ४२० ॥ ४२१ ॥ ४२२ ॥ ४२३ ॥ ४२४ ॥ ४२५ ॥ ४२६ ॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥ ४२९ ॥ ४३० ॥ ४३१ ॥ ४३२ ॥ ४३३ ॥ ४३४ ॥ ४३५ ॥ ४३६ ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥ ४४० ॥ ४४१ ॥ ४४२ ॥ ४४३ ॥ ४४४ ॥ ४४५ ॥ ४४६ ॥ ४४७ ॥ ४४८ ॥ ४४९ ॥ ४५० ॥ ४५१ ॥ ४५२ ॥ ४५३ ॥ ४५४ ॥ ४५५ ॥ ४५६ ॥ ४५७ ॥ ४५८ ॥ ४५९ ॥ ४६० ॥ ४६१ ॥ ४६२ ॥ ४६३ ॥ ४६४ ॥ ४६५ ॥ ४६६ ॥ ४६७ ॥ ४६८ ॥ ४६९ ॥ ४७० ॥ ४७१ ॥ ४७२ ॥ ४७३ ॥ ४७४ ॥ ४७५ ॥ ४७६ ॥ ४७७ ॥ ४७८ ॥ ४७९ ॥ ४८० ॥ ४८१ ॥ ४८२ ॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥ ४८५ ॥ ४८६ ॥ ४८७ ॥ ४८८ ॥ ४८९ ॥ ४९० ॥ ४९१ ॥ ४९२ ॥ ४९३ ॥ ४९४ ॥ ४९५ ॥ ४९६ ॥ ४९७ ॥ ४९८ ॥ ४९९ ॥ ५०० ॥ ५०१ ॥ ५०२ ॥ ५०३ ॥ ५०४ ॥ ५०५ ॥ ५०६ ॥ ५०७ ॥ ५०८ ॥ ५०९ ॥ ५१० ॥ ५११ ॥ ५१२ ॥ ५१३ ॥ ५१४ ॥ ५१५ ॥ ५१६ ॥ ५१७ ॥ ५१८ ॥ ५१९ ॥ ५२० ॥ ५२१ ॥ ५२२ ॥ ५२३ ॥ ५२४ ॥ ५२५ ॥ ५२६ ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥ ५२९ ॥ ५३० ॥ ५३१ ॥ ५३२ ॥ ५३३ ॥ ५३४ ॥ ५३५ ॥ ५३६ ॥ ५३७ ॥ ५३८ ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥ ५४१ ॥ ५४२ ॥ ५४३ ॥ ५४४ ॥ ५४५ ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥ ५४८ ॥ ५४९ ॥ ५५० ॥ ५५१ ॥ ५५२ ॥ ५५३ ॥ ५५४ ॥ ५५५ ॥ ५५६ ॥ ५५७ ॥ ५५८ ॥ ५५९ ॥ ५६० ॥ ५६१ ॥ ५६२ ॥ ५६३ ॥ ५६४ ॥ ५६५ ॥ ५६६ ॥ ५६७ ॥ ५६८ ॥ ५६९ ॥ ५७० ॥ ५७१ ॥ ५७२ ॥ ५७३ ॥ ५७४ ॥ ५७५ ॥ ५७६ ॥ ५७७ ॥ ५७८ ॥ ५७९ ॥ ५८० ॥ ५८१ ॥ ५८२ ॥ ५८३ ॥ ५८४ ॥ ५८५ ॥ ५८६ ॥ ५८७ ॥ ५८८ ॥ ५८९ ॥ ५९० ॥ ५९१ ॥ ५९२ ॥ ५९३ ॥ ५९४ ॥ ५९५ ॥ ५९६ ॥ ५९७ ॥ ५९८ ॥ ५९९ ॥ ६०० ॥ ६०१ ॥ ६०२ ॥ ६०३ ॥ ६०४ ॥ ६०५ ॥ ६०६ ॥ ६०७ ॥ ६०८ ॥ ६०९ ॥ ६१० ॥ ६११ ॥ ६१२ ॥ ६१३ ॥ ६१४ ॥ ६१५ ॥ ६१६ ॥ ६१७ ॥ ६१८ ॥ ६१९ ॥ ६२० ॥ ६२१ ॥ ६२२ ॥ ६२३ ॥ ६२४ ॥ ६२५ ॥ ६२६ ॥ ६२७ ॥ ६२८ ॥ ६२९ ॥ ६३० ॥ ६३१ ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥ ६३४ ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥ ६३७ ॥ ६३८ ॥ ६३९ ॥ ६४० ॥ ६४१ ॥ ६४२ ॥ ६४३ ॥ ६४४ ॥ ६४५ ॥ ६४६ ॥ ६४७ ॥ ६४८ ॥ ६४९ ॥ ६५० ॥ ६५१ ॥ ६५२ ॥ ६५३ ॥ ६५४ ॥ ६५५ ॥ ६५६ ॥ ६५७ ॥ ६५८ ॥ ६५९ ॥ ६६० ॥ ६६१ ॥ ६६२ ॥ ६६३ ॥ ६६४ ॥ ६६५ ॥ ६६६ ॥ ६६७ ॥ ६६८ ॥ ६६९ ॥ ६७० ॥ ६७१ ॥ ६७२ ॥ ६७३ ॥ ६७४ ॥ ६७५ ॥ ६७६ ॥ ६७७ ॥ ६७८ ॥ ६७९ ॥ ६८० ॥ ६८१ ॥ ६८२ ॥ ६८३ ॥ ६८४ ॥ ६८५ ॥ ६८६ ॥ ६८७ ॥ ६८८ ॥ ६८९ ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥ ६९२ ॥ ६९३ ॥ ६९४ ॥ ६९५ ॥ ६९६ ॥ ६९७ ॥ ६९८ ॥ ६९९ ॥ ७०० ॥ ७०१ ॥ ७०२ ॥ ७०३ ॥ ७०४ ॥ ७०५ ॥ ७०६ ॥ ७०७ ॥ ७०८ ॥ ७०९ ॥ ७१० ॥ ७११ ॥ ७१२ ॥ ७१३ ॥ ७१४ ॥ ७१५ ॥ ७१६ ॥ ७१७ ॥ ७१८ ॥ ७१९ ॥ ७२० ॥ ७२१ ॥ ७२२ ॥ ७२३ ॥ ७२४ ॥ ७२५ ॥ ७२६ ॥ ७२७ ॥ ७२८ ॥ ७२९ ॥ ७३० ॥ ७३१ ॥ ७३२ ॥ ७३३ ॥ ७३४ ॥ ७३५ ॥ ७३६ ॥ ७३७ ॥ ७३८ ॥ ७३९ ॥ ७४० ॥ ७४१ ॥ ७४२ ॥ ७४३ ॥ ७४४ ॥ ७४५ ॥ ७४६ ॥ ७४७ ॥ ७४८ ॥ ७४९ ॥ ७५० ॥ ७५१ ॥ ७५२ ॥ ७५३ ॥ ७५४ ॥ ७५५ ॥ ७५६ ॥ ७५७ ॥ ७५८ ॥ ७५९ ॥ ७६० ॥ ७६१ ॥ ७६२ ॥ ७६३ ॥ ७६४ ॥ ७६५ ॥ ७६६ ॥ ७६७ ॥ ७६८ ॥ ७६९ ॥ ७७० ॥ ७७१ ॥ ७७२ ॥ ७७३ ॥ ७७४ ॥ ७७५ ॥ ७७६ ॥ ७७७ ॥ ७७८ ॥ ७७९ ॥ ७८० ॥ ७८१ ॥ ७८२ ॥ ७८३ ॥ ७८४ ॥ ७८५ ॥ ७८६ ॥ ७८७ ॥ ७८८ ॥ ७८९ ॥ ७९० ॥ ७९१ ॥ ७९२ ॥ ७९३ ॥ ७९४ ॥ ७९५ ॥ ७९६ ॥ ७९७ ॥ ७९८ ॥ ७९९ ॥ ८०० ॥ ८०१ ॥ ८०२ ॥ ८०३ ॥ ८०४ ॥ ८०५ ॥ ८०६ ॥ ८०७ ॥ ८०८ ॥ ८०९ ॥ ८१० ॥ ८११ ॥ ८१२ ॥ ८१३ ॥ ८१४ ॥ ८१५ ॥ ८१६ ॥ ८१७ ॥ ८१८ ॥ ८१९ ॥ ८२० ॥ ८२१ ॥ ८२२ ॥ ८२३ ॥ ८२४ ॥ ८२५ ॥ ८२६ ॥ ८२७ ॥ ८२८ ॥ ८२९ ॥ ८३० ॥ ८३१ ॥ ८३२ ॥ ८३३ ॥ ८३४ ॥ ८३५ ॥ ८३६ ॥ ८३७ ॥ ८३८ ॥ ८३९ ॥ ८४० ॥ ८४१ ॥ ८४२ ॥ ८४३ ॥ ८४४ ॥ ८४५ ॥ ८४६ ॥ ८४७ ॥ ८४८ ॥ ८४९ ॥ ८५० ॥ ८५१ ॥ ८५२ ॥ ८५३ ॥ ८५४ ॥ ८५५ ॥ ८५६ ॥ ८५७ ॥ ८५८ ॥ ८५९ ॥ ८६० ॥ ८६१ ॥ ८६२ ॥ ८६३ ॥ ८६४ ॥ ८६५ ॥ ८६६ ॥ ८६७ ॥ ८६८ ॥ ८६९ ॥ ८७० ॥ ८७१ ॥ ८७२ ॥ ८७३ ॥ ८७४ ॥ ८७५ ॥ ८७६ ॥ ८७७ ॥ ८७८ ॥ ८७९ ॥ ८८० ॥ ८८१ ॥ ८८२ ॥ ८८३ ॥ ८८४ ॥ ८८५ ॥ ८८६ ॥ ८८७ ॥ ८८८ ॥ ८८९ ॥ ८९० ॥ ८९१ ॥ ८९२ ॥ ८९३ ॥ ८९४ ॥ ८९५ ॥ ८९६ ॥ ८९७ ॥ ८९८ ॥ ८९९ ॥ ९०० ॥ ९०१ ॥ ९०२ ॥ ९०३ ॥ ९०४ ॥ ९०५ ॥ ९०६ ॥ ९०७ ॥ ९०८ ॥ ९०९ ॥ ९१० ॥ ९११ ॥ ९१२ ॥ ९१३ ॥ ९१४ ॥ ९१५ ॥ ९१६ ॥ ९१७ ॥ ९१८ ॥ ९१९ ॥ ९२० ॥ ९२१ ॥ ९२२ ॥ ९२३ ॥ ९२४ ॥ ९२५ ॥ ९२६ ॥ ९२७ ॥ ९२८ ॥ ९२९ ॥ ९३० ॥ ९३१ ॥ ९३२ ॥ ९३३ ॥ ९३४ ॥ ९३५ ॥ ९३६ ॥ ९३७ ॥ ९३८ ॥ ९३९ ॥ ९४० ॥ ९४१ ॥ ९४२ ॥ ९४३ ॥ ९४४ ॥ ९४५ ॥ ९४६ ॥ ९४७ ॥ ९४८ ॥ ९४९ ॥ ९५० ॥ ९५१ ॥ ९५२ ॥ ९५३ ॥ ९५४ ॥ ९५५ ॥ ९५६ ॥ ९५७ ॥ ९५८ ॥ ९५९ ॥ ९६० ॥ ९६१ ॥ ९६२ ॥ ९६३ ॥ ९६४ ॥ ९६५ ॥ ९६६ ॥ ९६७ ॥ ९६८ ॥ ९६९ ॥ ९७० ॥ ९७१ ॥ ९७२ ॥ ९७३ ॥ ९७४ ॥ ९७५ ॥ ९७६ ॥ ९७७ ॥ ९७८ ॥ ९७९ ॥ ९८० ॥ ९८१ ॥ ९८२ ॥ ९८३ ॥ ९८४ ॥ ९८५ ॥ ९८६ ॥ ९८७ ॥ ९८८ ॥ ९८९ ॥ ९९० ॥ ९९१ ॥ ९९२ ॥ ९९३ ॥ ९९४ ॥ ९९५ ॥ ९९६ ॥ ९९७ ॥ ९९८ ॥ ९९९ ॥ १००० ॥

रोगार्तोव्याधियुक्तोवापठन्यापात्यमुच्यते ॥ वास्तुमध्येतुपठतःकुलेस्वस्ययनंभवेत् ॥ ६२ ॥ क्षेत्रमध्येतुपठतःसर्वसस्यंप्ररोहति ॥ गच्छतःक्षेममध्वानंग्रामां
तरगतःपठन् ॥ ६३ ॥ आत्मनश्चसुतानांचदाराणांचधनस्यच ॥ बीजानामोषधीनांचरक्षामेतांप्रयोजयेत् ॥ ६४ ॥ एतान्संग्रामकालेतुपठतःक्षत्रियस्यतु ॥
व्रजंतिरिपवोनाशंक्षेमंचपरिवर्ते ॥ ६५ ॥ एतान्देवेचपिष्येचपठतःपुरुषस्यहि ॥ भुंजतेपितरःकव्यंहव्यंचत्रिदिवौकसः ॥ ६६ ॥ नव्याधिश्चापद्भयनद्विपा
न्नहितस्करात् ॥ कश्मलंलघुतांयातिपाप्मनाचप्रमुच्यते ॥ ६७ ॥ यानपात्रेचयानेचप्रवासेराजवेश्मनि ॥ परांसिद्धिमवाप्नोतिसावित्रीलघुत्तमांपठन् ॥
॥ ६८ ॥ नचराजभयंतेषांनपिशाचान्नराक्षसात् ॥ नाभ्यंबुपवनव्यालाद्भयंतस्योपजायते ॥ ६९ ॥ चतुर्णामपिपणानामाश्रमस्यविशेषतः ॥ करातिसतंशां
तिसावित्रीमुत्तमांपठन् ॥ ७० ॥ नाग्निर्दहतिकाष्ठानिसावित्रीयत्रपठ्यते ॥ नतत्रबालोधिष्यतेनचतिष्ठंतिपन्नगाः ॥ ७१ ॥ नतेषांविद्यतेदुःखंगच्छंतिपरमां
गतिं ॥ येभृण्वंतिमहद्ब्रह्मसावित्रीगुणकीर्तनं ॥ ७२ ॥ गवांमध्येतुपठतोगावोस्यबहुवत्सलाः ॥ प्रस्थानेवाप्रवासेवासर्वावस्थांगतःपठेत् ॥ ७३ ॥ जपतांजु
ह्वतांचैवनित्यंचप्रयतात्मनां ॥ ऋषीणांपरमंजप्यंगुल्यमेतन्नराधिप ॥ ७४ ॥ याथातथ्येनसिद्धस्यइतिहासंपुरातनं ॥ पराशरमतंदिव्यंशक्रायकथितंपुरा ॥
॥ ७५ ॥ तदेतत्तेसमाख्यातंतथ्यंब्रह्मसनातनं ॥ हृदयंसर्वभूतानांश्रुतिरेषासनातनी ॥ ७६ ॥ सोमादित्यान्वयाःसर्वेराघवाःकुरवस्तथा ॥ पठंतिशुचयोनित्यं
सावित्रींप्राणिनांगतिं ॥ ७७ ॥ अभ्यासेनित्यंदेवानांसमर्षीणांध्रुवस्यच ॥ मोक्षणंसर्वरुच्छाणांमोचयत्यशुभात्सदा ॥ ७८ ॥ वृद्धैःकाश्यपगौतमप्रभृ
तिभिर्भृग्वंगिरोज्यादिभिःशुक्रागस्त्यबृहस्पतिप्रभृतिभिर्ब्रह्मर्षिभिःसेवितं ॥ भारद्वाजमतंऋचीकतनयैःप्राप्तंवासिष्ठात्पुनःसावित्रीमधिगम्यशक्रवसुभिःकृ
त्स्माजितादानवाः ॥ ७९ ॥ योगोशतंकनकशृंगमयंददातिविप्रायवेदविदुषेचबहुश्रुताय ॥ दिव्यांचभारतकथांकथयेच्चनित्यंतुल्यंफलंभवतितस्यचतस्यचैव
॥ ८० ॥ धर्मोविवर्धतिभृगोःपरिकीर्तनेनवीर्यविवर्धतिवसिष्ठनमोनतेन ॥ संग्रामजिद्धवतिचैवरघुंनमस्यन्यादश्विनौचपरिकीर्तयतोनरोगः ॥ ८१ ॥
एषातेकथिताराजन्सावित्रीब्रह्मशाश्वती ॥ विवक्षुरसियच्चात्यत्तत्तेवक्ष्यामिभारत ॥ ८२ ॥ इतिश्रीम० अनुशासनपर्वणिआनुशास०दानधर्मसावित्री
व्रतोपाख्यानेएकपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५१ ॥ ॥ ६३ ॥